

DPN 5549

Title: सत्य नारायण कथा / SATYANĀRĀYAṆA KATHĀ

Run. No. 6240

Cat. No.

Micro. No.

Subject धार्मिक कथा / Religious narrative

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Sanskrit text with Nepali translation

Size in cms. 13.5 x 31.4

Folios 17

Lines (in a page) 11

हिन्दु मूल पाठ नयाँ नेपाली अनुवाद पाठ

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

5

Author / translator

Scribe / donor

नन्दकुमार मिश्र नेपाली अनुवादकर्ता
Nandakumar Mishra
Nepali translator

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सत्यनारायणाय नमः ॥ ॥ कोहि मेक समझमा संपूर्ण प्रारोपन जनकन हीन होए
भन्ना मति भयाका शौनकादि सुनिहा जो धन सो पाम सुन्दर बहुत मणीय मेमिषाण्य
वन विषे बित्तको आनदित गन्मा समाकन गदा भया २ ॥ १ ॥

P. T. O.

3+64+3

स्मितापि वाक्य / Collection

म इदं पठते मित्यं शृणोति मुनिस्तदा : तस्य नष्टयानि पापानि सत्पदेव प्रसादाः ॥ १६॥

इति श्री स्कन्द उपाख्ये रेवा खण्डे सितपनायाम् प्रोक्तं कथायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
हे मुनि श्रेष्ठ हो जैन प्राणि मित्यं यन्को पाठ गलत. अथवा सुनला. तत्कन. सत्पदेवका
प्रसादले जी सिद्धार्थ पाप जो दं हो सदै नष्ट भै जांद मरी. दूतजी जो दं सिद्धार्थ
मुनिछ प्रति काइत गदर म्मा ॥ १६॥

इति श्री सितपनायाम् प्रोक्तं कथा वार्तिक भाषा, नंद कुमार मिश्र द्वारा
पंचमोऽध्यायः ॥ ॥

2.5

20

15

10

5

0

centimeter 5

10

15

20

25

30

35

श्री गंगाधरपाणिनिप्रणीतं जयसिद्धिं प्रदत्तं श्री कृष्णाय नमः
सुप्रसन्नं भवति मन्त्रोक्तं यत्पुनश्च जयसिद्धिं प्रदत्तं श्री कृष्णाय नमः
वदन्ति यत्पुनश्च जयसिद्धिं प्रदत्तं श्री कृष्णाय नमः
सत्यनारायण
श्री सत्यनारायणनवग्रन्थ

25
20
15
10
5
0

श्रीम-टि

१ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसत्यनारायणायनमः॥ ॥ कोहियेक समयमा संपूर्ण प्राणिजन कनदीत हो म भंन्याम तिभयाका शौनका
दिमुनि हस्त जो छन सो परम मुन्दर बहुरा मणीय नैमिवारण वन विष चित्र को आनंदित गर्वा सभा कन गदा भयार ॥ १ ॥ तेमज
गामावडने जस्वी केरि कसा आवडय शस्त्री भयाका वाम जी को शिष्य सून जी जो छन संपूर्ण शिष्य हस्त ले सहन मै हरिखराग

क

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ एकदा मुनय सर्व लोको हिते रताः सुरमे नैमिवारणे जो श्री चक्रुर्मनो माम् ॥ १ ॥ तदन्तर
महाने जा व्यास शिष्यो महायशः॥ सूनः शिष्य गणै युक्त समाया नो हरि स्मरन् ॥ २ ॥ तमाया ने ममा लोक सु
नै शास्त्रार्थ पारंगत् ॥ मुनि सर्व सून स्थुः शौनका घात पोध राः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गई आइ पुदा भयार ॥ २ ॥ शौनकादि रिखि हस्त जो छन संपूर्ण शास्त्र मापारंग भयाका सून जी आया को देखि कन संपूर्ण
तपोधन रिखि हस्त जो छन सो ऊह पट्ट उठि खडा हुदा भयार ॥ ३ ॥ संपूर्ण रिखि हस्त जो छन को देखि सकल धर्म क
न जा न्या भयाका सून जी लेपनि परम वेद मय भयाका शौनकादि गारिया का रिखि हस्त कन देखि वडा भक्ति ले

म
१

युक्त भैचौ भूमि मंडवत् प्रसा मगदा भया ॥ ४ ॥ मुनि श्रेष्ठ हस्त ले दिया को आसन मा शिष्य हस्त ले सहि वडा बुद्धि पान
न जी वस्तु भया ॥ ५ ॥ जवे सून जी आसन मा वस्तु भया विवि कै शौनकादि मुनि श्रेष्ठ हस्त जो छन सून जी रि भक्ति ले युक्त
भै कवाच वन्द्यो द्य भया भया ॥ ६ ॥ हे भगवत् सवि श्रेष्ठ सर्व ज सून जी कलिका लभया पछि मनु क्षता हरिका भक्ति रह
न्या छे म को न उपाय ले मनु क्षता हरि को भक्ति रहला ॥ ७ ॥ किन भन्या कलिका लभया पछि संपूर्ण मनु क्ष पाप कर्म पात्र क
सेपिता म हस्त भन्या मुनी न्यारम वेद मवान् ॥ न नाम दाउ बहू मो सर्व धर्म विदा स्वरः ॥ ४ ॥ वासु ने म ह बुद्धि
लो दते मुनि सून मैः ॥ उवा सून द सो मध्ये सर्वेः शिष्य गणै वनः ॥ ५ ॥ तत्रोपविष्टं तं सून शौनको मुनि सून
मः ॥ वडा जलि मिमं वान् प्रपच्छ विन्या चितः ॥ ६ ॥ महर्षे सून सर्व ज कलिकाले समागमेः ॥ केनोपायेन भग
वन् हरि भक्ति भवेत् एवम् ॥ ७ ॥ कलो सर्व भविष्य निपाप कर्म परायणः ॥ वेद शिष्या विहीना सून तेषां श्रेयः कथं भवेत् ॥
न ऊन्या वेद विद्या दि हो उन्या छन तस्माति मनु क्ष हस्त कन कल्याण को ना तर हले होला ॥ ८ ॥ केरि अ को क्का कुन्या छ भ
न्या प्राण जो छन सो अन्न माग येर वदय जान्या छन फेरि क्का कुन्या छ भन्या आयु र्द पनी छोय भै जान्या छन थोरै दिन
मात्र ज्यू न्या छन केरि क्को कुन्या छ भन्या निर्ध निज न्या छन धन न भया पछि पाप कर्म गन्या छ अन्तरोगि कुंछ ॥ ९ ॥

25

बीस प
२

कैरि कलौ ऊन्या छ भन्या अणपनि वजो परिमले मान ऊन्या छ कैरी कया ऊन्या छ भन्या शास्त्र जान्या मानि सले पुं गप ऊन्या काम
गन्या छैन ॥१०॥ नृभयापछि पाप हृत्तिमा लागन्या छ पापले गरि मलीन मन ऊन्या छ मलीन मन भया काम नुय
ले न्याफनु वंसन हिन नष्ट गन्या छ ॥११॥ नस्मान् कारणात् हेमनजी जोना तरुले थोरै परिमले थोरै धन लेक

क

20

कला वन्न गताः प्राणाः लोकाः स्वल्पा युवतथा ॥ निर्धनाश्च भविष्यन्ति नात्मा पीडा प्रपीडिताः ॥ १२ ॥ प्रयासमाध
सुकृतं शास्त्रं सुप्रथितं द्विज ॥ नस्मान्केपि करिष्यन्ति कलौ न सुकृतं जनताः ॥१३॥ सुकृतेषु विनये सुप्रहृतेषु पापकर्मणि
॥ सर्वं शास्त्रं सर्वं गमिष्यन्ति श्रमशयाः ॥१४॥ स्वल्पं भ्रमे रत्या विनैरत्यकाले श्रमं ॥ यथा भवेत्तदा पुण्यं तथा कथं य
सूतनः ॥१५॥ यस्यापदेशतः पुण्यं यम्या कृतं ते जनः सत्प्राणी भवेत्सर्वः ॥ इति शास्त्रं निर्णयः ॥१६॥ पुण्योपदे
शी सदयः केन वै श्रविर्जितः ॥ अपापान विरोधी च चत्वारः केशवोपमाः ॥ १७ ॥ ॥ ॥

लिकाल मावजो पुण्य कन ऊन्या सो उपाय जो छ सो हा मिह सलाई आ जागुं हवस ॥ १२ ॥ हेमनजी जस्का उपदे सले म
नुय ले पुण्य वा पाप गरोस न सलाई ते स पाप पुण्य को हि सा पा उ न्या छ यो जा छ शास्त्र मानि गय छन ॥ १३ ॥ पुण्य का उपदे
स गन्या दया लु कपट देखि रहित निस्याप भेर ह्या कसे संग विरोध भया कोन गन्या य सा तरु को मनुय जो छ नारायण मान ऊन ॥१४॥

देव
२

15

10

यो संसारमा आकृष्टा निभै कन जो अरुलाई जान देवै न न समनुय कन पति जान रूपि पामे भाले खुसि भै कन हेन्या छैन
१५ ॥ नस्मान् कारणा रत्न रूपी जान ले जो अरुलाई संतो जग उद छन न समनुय कन जान रूप धारा गन्या कामा रायणा
भनि जान ॥१६॥ नस्मान् हेमहामने सूतजी यलो कोन ब्रत छन अथवा कोन तप छन जो न गनले मनो वांछित फल क

ज्ञानं संप्राप्य संसारेयः परेभ्यो नयच्छति ॥ ज्ञानरूपी हरिस्तस्यैव सन्तर्जने क्षते ॥ १५ ॥ ज्ञानरत्नैश्च रत्नैश्च पर
संतोषकृत्तरः स ज्ञेयः सम्मते नूनं नर रूपधरो हरिः ॥१६॥ ब्रतेन तपसा किंवा प्राप्य ते वांछितं फल ॥ तस
र्वं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महा मतो ॥१७॥ त्वमेव मुनि शार्दूल वेद वेदाङ्ग पारंग त्वद्वतेन हि वक्रान्तो तपे स
त्वम्यास शिषितः ॥१८॥ सूत उवाच ॥ धन्यो सि त्वं मुनि श्रेष्ठ त्वमेव वै क्षमापणी यतः समस्त लोकानां हितमिच्छ

5

न पाई छ सो कथा सुना को तुलोइ छा भौरा को छ सो हजुर को मुखार विंदवाट आगुं हवस ॥ १० ॥ हे मुनि श्रेष्ठ वेद वेदाङ्ग माया
रग ऊनु भया का सूतजी हजुर जति का वक्ता को हि पनी छैन कीन भन्या हजुर जो छ वा सजी का शिष्य ऊना जे ॥११॥ भनि जो
नकादि महात्म्य हरु ले विंति गयो र सूत जि आग छैन हे मुनि श्रेष्ठ तपाई धन्य ऊनु ऊं छ तपाजी जो छ संपूर्ण वैष्णव
हरु का अग्रगण्य हो किन भन्या स हरा प्राणी हरु कन हिन हवस भनी सदा सर्वदा काल मन मालिनु भया का हे सो नेक
१२ ॥

0

25

भीमना
३

जी मुं नुरुवसु निमिकनम कहं छु जसातरु ले निमीलेम संग सोधनु भया को हो नसेतरु सित नारद मुनिले लक्ष्मीप
ति भगवान् संग सोधनिगया मा भगवान् लक्ष्मीपतीवाट नारद प्रजि आशागनु भया को हो सो मकहं छु हे शिविलोक साव
धान भै सुन ॥२०॥ कोहियेक समयमा नारद जो गी जो छु संपूर्ण प्राणि काहित हवसु भया इच्छले अनेग भुवन धुमि

क

20

सि सव सा ॥१९॥ शुभाशो न कव धामि यवया सोनु मि अते ॥ नारदे नैव मुक्तः सन्धग वान्क मलापतिः ॥ मूर्ख ये यथैवा
हन्त छु राक्षस माहिताः ॥२०॥ येक दानार दो योगी पगनु हवां छया ॥ पर्यट निविधां लोकात्म्य लोक मुपागमत् ॥
२१॥ नवदष्टा जनास्तर्वे नाना केश समन्विताः नाना योनि समुत्पन्नाः क्लिश्यन्ते पाप कर्मभिः ॥२२॥ केनोपायेन चेते
वां दुःख नाशो भवेत्तु ॥२३॥ इति संविन्त्य मनसा विष्णु लोकं तत्तदा ॥ तत्र नारायणं देवं भक्त वर्णं चतुर्भुजं ॥२४॥
संखचक्र धरं देवं वनमा ला विभू विनम् ॥२५॥ दृष्ट्वा तं देव देवेशो तर्तुं समुपचक्रमे ॥२६॥ ॥ ॥

मर्त्यलोक आई पुणार ॥२७॥ तोह नारद जीलेका देव्या भया संपूर्ण प्राणि हन्त अनेक तरु का पीडाले युक्त भै अनेग योनी माउ
त्यन्त भै पाप कर्म ले केशित भै रक्षा को देव्यार ॥२८॥ अव इन्ह ह जो छु को नाउपाय ले निश्चित गरि दुःख देवि न पार होला भै
न्यामन माली विष्णु लोक गया ॥२९॥ ताह जो छु खच्छन् चारि भुक्त भया को से नावर्ग भया का चतुर्बाहु शीखन क्रगदा पद्मधारण
वाका वन माली शोभित भया का देव देवेश नारायण को सुनिग दा भया ॥३०॥ नारद उवाच ॥ हे वाङ्मनोतीत वाक्य ले बोलित सकि

नारायण
३

15

10

मा मन ले पति तगाग रिन सकिया अनंत शक्ति स्वरूप हजुर का चारणार विंद मान मस्कार हजुर कला भया आदि अंत न भया का गुण भनु
मन्वा जतम ते स्वाट पति भिन गुणात्मा गुणात्वरूप भया पति निर्गुणात्वरूप भया पति कुया नोति स्वरूप कुनु दुह ॥३१॥ हे परमेश्व
र नारायण के रि तपात्री कला भया संपूर्ण प्राणि भेद अचि भया का भक्त जन ह हका भक्ति भं गुरु कनना सगर्वा भया का हे परमेश्वर
नि सुनिग या को छु नि श्री नारायण जो छे प्रशान भै नारद प्रति आस गदा भया ॥३२॥ हे महाभाग तिमिका काम ले आयो को न करे

नारद उवाच ॥ नमस्ते वाङ्मनोतीत रूपायानंत शक्तये ॥ आदिम ध्यान ही नाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥३३॥ सर्व आमा
दिभूताय भक्ताना मार्जना सिने ॥ शुक्ला लोचन तो विद्यातीर दं प्रत्यभाषतः ॥३४॥ किमर्थं मागतो सिर्त्वं किं ते मनसि
वर्तते ॥ कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते ॥३५॥ नारद उवाच ॥ मर्त्य लोके जनाः सर्वे नाना लोक समन्विताः ॥ नाना
योनि समुत्पन्नाः क्लिश्यन्ते पाप कर्मभिः ॥३६॥

5

मन मालिशा को हो तिमिका कुरा कन सो छे सो कुरा म कहं छु भनी आया भयो ॥ नारद जी विनिग र्गला ग्या हेनाथ मजा हा आया
को क्या काराले हो भया महु मदे कि दे मर्त्य लोक मा पुणार मर्त्य लोक माता संपूर्ण लोक जो छु नाना तरु का रोको को
नाना योनि माउत्यन्त भै पाप ले पुस्त भै महु दुःख पाई रक्षा को देति इन्ह ह को उवाच कुया कुरा को उपाय विनिग र्गला कन आया
का कं भनि छी नारायण का हजुर मा विनिग र्गला भया ॥३७॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

25
20
15
10
5
0

श्री सत्यना
४

जोनवपायले

हेपरमेधनायगा मेराउपरकपाहुँ ना संपूर्णजगिहसकनउडारहोलासो थोरैपरिधमले संपूर्णकेशनासहुँ सो सुनो
कोइकालेआयाकाहुँ ॥ १० ॥ भनीविनिगन्या भगवानआजागनुहुँ हरेवस्त हेनारद संपूर्णजगिहउपकारगनीको
इकालेआयाकोनारद जुनवतगनीले मनुषहर मोहवाटहुँ लासो उपायकहंहुँ सुन ॥ ११ ॥ हेब्रह्मण नारदजी जोनवतग

क

नक्तथंसमयेनाथ लघुवायेमतदद ॥ ओतुमिच्छामितसर्वरूपास्तियदिनेमयि ॥ १० ॥ भगवानुवाच ॥ साधु
पृथ्व्यावतलोकातुप्रह्वान्कया ॥ यत्कृत्वा मुच्यते मोहान्नवृणश्चवदामि ते ॥ ११ ॥ वनमल्लिमल्लपुरणं
स्वर्गेषुविबुलर्भ ॥ तदस्त्रेहामयविप्रप्रकाशंक्रियतेधुना ॥ १२ ॥ सत्यनायगासोईवतंसत्यविधानतः
॥ कृत्वामसद्यःसुखंभुक्तापामोक्षमाप्नुयात् ॥ १३ ॥ नारदउवाच किंफलं किंविधानश्चकृत्केनवतदुतम् ॥ तसर्वं
वित्तराहुहिकदाकार्यं हितदुतम् ॥ १४ ॥

नलेहुलोपुंणकनेपाइत्याफेरिकलोभन्या संपूर्णजगिहसलाई इहभिमयाकोतिमिलेवडाप्रेमसाथ सोधो मकहंहुँ सुन ॥
॥ जुनसत्यनायगाकोवनहसो विधानपूर्वकगली सोइहलोकनायडासुखिभैपरलोकमा मोक्षपदविपाड्याह ॥ १५ ॥ सोवन
तिमिलाई विधानपूर्वककहंहुँ सुनभनि आजाभयो नारदजी फेरिविनिगह हन्य योवन कोनवतमागनीहो अधिकसखेगारि
गयाकोहुँ योवनगनीहसले क्वाक्याफलकनपायाकोई संपूर्णहृत्तान्त आशागरिवक्याजाव सभनिविनिग दभिया ॥ १६ ॥

रायगा
४

नाथर

फल

श्रीभगवानुवाच ॥ हेवस्त सुन यस्यवतगनीलो क्वाक्यापाईहभन्या पेलेहुः खसोककोनासहुँ न्याह धनधान्यादिवठयाह फेरि
सोभाग्य संततिवठयाह कंहिगयापनी आफनुजि हुँयाह ॥ १७ ॥ योवनजोनसुकेदिनतागयापनिहुँ निसामुखेमासाव
रंगगर्भ भक्तिभ्रष्टापूर्वक आफनाभाईवंधु ब्राह्मणसहित भैसत्यनायगाकोवन एविमागनु भैवेधक्याकोवनाउभन्या
भयोगडकोपिठोभयो घिउभयो दुधभयो गऊकोपिठोपाईयेनभया मारिचौबलको सोहभयापनी हसकरभयापनी हुँहुँ सुन
श्रीभगवानुवाच ॥ १८ ॥ स्वशोकादिशमनंधनधान्यविदईनेम् ॥ सोभाग्य संततिकरं सर्वविविजयप्रदम् ॥ १९ ॥ यस्मिन्कस्मिन्दिनेम
न्याभक्तिभ्रष्टासमन्वितः सत्यनायगादेवयजेवेदनिशामुखि ॥ २० ॥ वाधवेडाहोश्रेवसहितोधमेतया ॥ नैवेद्यभक्तितोदया
त सपादंभक्षमुत्तमम् ॥ २१ ॥ रभाफलेद्युतक्षीर गोधूमस्यचतुर्गकम् ॥ अभावेशालिचूर्णम्वा सकराचगुडतथा ॥ २२ ॥
॥ सपादं सर्वभक्षणां एकीकृत्य निवेदयेत् ॥ विप्रोयदक्षिणां दद्यात् कथांश्रुत्वाजने स्मरु ॥ २३ ॥

यापनिहुँ सपादभन्याकोसवाईकाहिसावले राखनु अर्थान् सक्तापाउभयो सक्तासेरभयो यसेरतिजोमेलाई यकहागरि
मिलाई नैवेद्यवताउनु भक्तिभ्रष्टापूर्वक सत्यनायगाको पूजागरि नैवेद्यवताउनु ॥ २४ ॥ हेनारदजि यलातरहसितसाम
यतिपारगरि सत्यनायगाकोपूजागर्भ पूजाको अंत्यमा संपूर्णभाईवंधु इहमित्रहससाथभैकथासुनु ब्राह्मणलाईदक्षिणा
दिनु नैवेद्य घादिदिनु कालोदेखिनु आफनाभाईवंधुवर्गसबै सामेलभैप्रशादखावु एत्रीनावकीर्तनादिगान्वजानगर्भ

25

श्रीसत्य

॥४०॥ नरनरः सर्वे सत्यनारायणको स्वरूपगगि आफना आफना घर जातु हेनारदजी जौन प्राणिले चोकहिया काविधिपूर्वक व
 नगर्णः नसको मनले जोवितायो सो निश्चयले गरि पाउला ॥४१॥ कलिकाल माविशे घले जन्ता वतये हिछ अरु केही केन हेका
 नारदजी अव अविअधि यस्तुत जस्तु जस्तुले गरि गयका छन सो कथा कहि छुनुन ॥४२॥ काशिपुरनगरा कोहि निर्जनी
 नतश्च वन्धुभिस्ताई विवेभ्यः प्रतिपादयेत् ॥ प्रसादं भक्षयेत् कृत्वा नृत्पुत्रादिकञ्चरेत् ॥४३॥ ततस्तु स्वगृहं गच्छेत्स
 त्पनारायणं स्मरन् ॥ एवं कृत्वा मन आणां वांछा मिद्धिर्भवेत्कृत्वम् ॥४४॥ विशेषतः कलियुगे नान्योपायोक्तिभूत
 ले ॥ कथामस्य प्रवक्ष्यामि कर्तुं येन परममे ॥४५॥ काश्चित्काशीपुरे ग्रामे आसीद्विधो नि निर्जनी ॥ शुधातृणां कु
 लो भूत्वा नित्यं वधामभूत्तले ॥४६॥ दुःखितं वीर्यं रां दृष्ट्वा भगवान्वासां प्रियः ॥ दृष्ट्वा स्वरूपं पापघट्टं विजना ररात्

क

20

उः खिवासा रा सुधाले व्याकुल भैष्ट धिमा धुमदै फिर्दे सखा कापिया ॥४७॥ तहा जो बाल राह रुक पिरो गार्ग्य भया कना रायरा
 जो छुवासा रा ले दुःख पापा को देखि वृद्धासा रा करु भै वेडा आदर साथ बाल रा संग सो धदा भया ॥४८॥ हे विप्रतिमिले सा
 हे दुख पायो का अर्थ ले हो किन दुःख पायेर हि दुःखोतिमि जो चाहैं सो कुरा भन मजाई सुना कोइ छाभयो ॥४९॥ भनिवासा रा रूप
 नारायण ले सो धनु भयो बाल रा भंछन म अत्यंत दरिद्र कुमि धामा गना निमित्त धुमद छु कना गल कहां जा निर्मील के हि उपाय छ
 भन्या के का गनु हे वस अर्थात् दुःखना सो पाय भया म नाथि कृपा हवस भव विविधो गयार ॥५०॥ दृष्ट्वा सा रा स्वरूपं भया हे दि

नारद

15

10

जश्वर सुन संपूर्ण मनो रथ पूर्ण गार्ग्य येक सत्यनारायण छन नन्का बज उत नवत एक छ सो वनतिमि गार ॥५१॥ जौ वतगर्ग
 ले संपूर्ण मनु व्य को उः खदा हि छुटि जांछ मनी विष्णु ले नारद गुनि थो लाई नन्का का छन सो वतको विधान पूर्वक
 नारद जी का मुख बाछु नी सो सत्यनारायण को वतगर वे सवत का प्रभाव ले तिमी लाई अस्वर्ग ले भनि भन भान
 किमर्थ भ्रम से विप्र मही कृत्वा सुदुःखितः ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथं तां यदि रोचते ॥५२॥ बालगोतिद रि
 दोर भिक्षार्थं भ्रमते मही ॥ उपोय यदि जाना सि रूपया कथय प्रभो ॥५३॥ दृष्ट्वा सा रा ॥ सत्यनारायणो देवो वो
 छितार्थ फल प्रदः तस्य त्वं विजगाई ल कुरु द्यवत मुत्तमै ॥५४॥ यत्कृत्वा सर्व दुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥
 विधानं च व्रते स्यात्स विप्र पाभा व्ययत्नेतः ॥५५॥ सत्यनारायणो दृष्ट्वा स्वरूपं वैवान् रधीयतः ॥ ॥ ॥

5

भैजो दाभया र नारद जिले उः खी बाल रा लाई सत्यनारायण का वन को संपूर्ण विधान सुनाई देयो र उः खी बाल रा जो छु
 व भो लि अ व स्य सत्यनारायण को वन गल ला भनि मन मा निश्चय गरि गया ॥५६॥ अब वतगर्ग को निश्चय ताग यो म संग धन
 छैन कलान र ले यो वतगर्ग हो भनी आश्चर्य मानि कि की ले रा न भरि सुत्पान न सर्वे उठी अवका गल भिक्षा ता मा गन जो
 उ भनि निस्की भिक्षा मागन गया धुमदा फिर्दा ते स दिन भिक्षा पनी सहा का भंदा के रे धन पाये ॥५७॥ सो हि दुख ले सा

वस्तुविधि

भीमन
६

नामनद नामावाह्यगाले आफना भाईवंधुवर्ग सर्वे निर्मज्जगागरि बाहले सहित भैसत्यनायगाकावन गयो र सो वनका
प्रभावले सतानन्द बाह्यगाले जो छ संहरा दुःखले रहीत भै वका धनाय भयो र तो ह देखि मै को भै कामा सत्यनायगाका
वनगर्गगयो ॥५१॥ हे नारदजी सतानन्द बाह्यगाले साधमा वनगर्ग भाईवंधु कुहुवह सभेन सर्वे ले पाप देखि मुक्त

ॐ

ततः प्रातः करिष्यामि वनमनसि निश्चितम् ॥५२॥ इति सन्धि न्यविजो सो रात्रौ निजान्न लब्धवान् ॥ ततः प्रातः समुत्था
य सत्यनायगा वनम् ॥५०॥ करिष्या इति सङ्कल्प्य भिक्षार्थमगमद्विजः ॥ तस्मिन्नेव दिने विप्रः पुरां द्रव्यमा
नवान् ॥५१॥ तेनैव वंधुभिः सार्द्धं सत्यस्य वनमाचरोत् ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तं सर्वसंपत्सु मन्वितः ॥५२॥ वन्धुवसदि
जश्रेष्ठो वनस्यास्य सादतः ततः प्रभतिकाले च मामिमां सिद्धं कृतम् ॥५३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवं नारायणस्यैव
वर्तमाना हि जौनम ॥ शतानन्द बाह्यगाले सकुटुंबे सह पूजन ॥५४॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्नुयात् ॥५५॥

नारायण

नैतुर्लभमोक्षकनपायाः ॥५४॥ तस्मात् यो वनजवपुश्चिमा प्रख्यात होला नवयो वनगर्ग मनुष्य हस्त संवेदः खदेखी पार हो
ला हे नारद जिभनी आशा भयो भलि मृतजीले सोनकादि मुनि प्रतिकहे सभाया ॥५५॥ इति सत्यनायगा वनकथा भाषाया
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सप्त उवाच ॥ हे शो न करिषि विष्णुले नारद मुनि प्रति आज्ञा गर्नु भया को संपूर्ण निमीलाइ सुना

आश्रय फेरिष्या मुं नाको इच्छा सो भनम कहं भुभति आजागर्द भयार सोन करिषि विंतिगर्द हे सूरजी ते सतानन्द बाह्य
गाले मात्र यो वनगर्गको हो अहले पनि गथा काछन् सो विलार मुन्नाको इच्छा भनी विंतीगया फेरि सूरजी भन्छन् ॥२॥
॥ सप्त उवाच ॥ हे शो नकादि मुनि हो यो वन ते सबाह्यले मात्र गथाको होइन अहले पनि गरिगया काछन् मुनः को हियक सम
वने चेदं यदा विप्रपृथिव्यो संवरिष्यति ॥ तदैव सर्वदुःखं च मनुष्यस्य विनश्यति ॥५५॥ इति श्रीरवाखंडे सत्यनायगा
वनकथायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ सप्त उवाच ॥ एवं नारायणो नोक्तं नारायणमहात्मने ॥ मयापि कथितं विप्रदि
मन्यक्त धयामिते ॥ १ ॥ शो नक उवाच ॥ ततो विप्रो वनं केन पृथिव्यां चरितं मुने ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि शस्त्रार्कप्र
जायते ॥२॥ सप्त उवाच ॥ शृणु त्वं मुनयः सर्वे तस्माच्च कृतं भुवि ॥ एकदा सदिजवरो निज विज्ञानुसारतः ॥३॥ वन्धु
भिः स्वजनैस्सार्द्धं वनं कर्तुं समुद्यतः ॥ एतस्मिन्नेव काले तु काष्ठक्रेता समागतः ॥४॥ ॥ ॥ ॥
यमा येक बाह्यगाले आफना विज्ञानुसार आफना वंधुवर्ग हस्त भया कुहुवह सभया सर्वे साते ल भै श्री सत्यनायगा
को वनगर्ग कन संग जास गर्ग कन लाया काथिया ते सब खन्मा एकदा उगवे चया अवाप्या सा जो छ दाउरा को भो
रिवाहिरि साइ बाह्यगाले घर भित्र पसाछन् र बाह्यगाले को देख्यो र प्रणाम गरि विंतिगया हे बाह्यगाले पाइया

25
20
15
10
5
0

भीमन्य
७

कामगर्तुं कं यो कामगर्तुं ले मनुष्यलाई का कुं सो वि स्तापताई जागर्तुं हवस भनि विविगया दनर योजो क सं प्रगति नो रथ
७ र्गगिरि दिव्या सत्यनारायण को वन हो जस्का प्रसाद ले म जो दुधना का भया का कु भनी भन्यो ॥ ६ ॥ ये तिको सु ॥ ॥

क

बहिका वृं व संस्थाप्य विप्रस्य मन्दि रियो ॥ क्षुधया परि पीडाया विप्र द द्या त था विधं ॥ ५ ॥ प्रणिपत्य द्वि जै प्रा
ह कि मि र्द क्रिय ने त्वया ॥ क ते किं फल मा प्रो ति वि स्तरा द दे म प्र भो ॥ ६ ॥ विप्र उवाच ॥ सत्यनारायण सो
दे व तं सर्वे सि त प्र द म् ॥ ७ ॥ दुः ख बो का दि श म नै सर्व व वि जय प्र द म् ॥ ८ ॥ यस्य प्र सा दा नै सर्व धन धान्या
दि क म्प ह न् ॥ त त स्त द्ध च र्न शु त्वा का क्य कै ना ति ह र्षि तः ॥ ९ ॥ प यो ज लं प्र सा दे च भु त्वा त न्न ग रिय यो ॥
सत्यनारायणो देव चिंतयन् स्थिरमानसः ॥ १० ॥

नारायण

नी मा व ति स उ न्मा जो क् वा स्म रा का व च न सु नि व डा वु सि भे ॥ १ ॥ ब्रा ह्म रा ले दि या को च रणो द क पि या प्र स द वा यी म
न ला इ द य ग रि सत्यनारायण का ध्या न ग र्दे ते से न ग र मा दा उ रा वो कि वे च न ग या ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

दाउराको दाम पाशोर ३

आ ज यो दा उ रा वे वु र ज ति दाम पा उ ला ते स रु पे लो स रा जा म जो रि सत्यनारायण को वन ग र्द दु भ नी मन मा चिं त ना ग दे
दा उ रा को भा रि वो कि सर्वे ध नि ह रु व स्म रा ठा उ मा वे च न ग यो र जे म दि न सत्यनारायण का भक्ति मन मा लि पा का कु ना
ले अ धि का भि दा दो व र ~~दाउराको दाम पाशोर~~ व डो वु सि भे व त ग र्ता क न स रा जा म पा क्य को के रा सक र ध्यं दू व ग दू को

का र्द व वि क र्णो ग मे प्रा प्य ते वा य य द न म् ॥ ते नै व स न्य दे व स्य क रिये व त मु त्त म म् ॥ १० ॥ इ ति सां चिं त्य मन सा
का र्द कृ त्वा तु म स्त के ॥ ज ग म न ग र स न्ये ध नी नां य त्र सं स्थि तिः ॥ ११ ॥ त दि ने का र्द भो ल्यं च दि गु रं प्रा प्त्वा
न सो ॥ त त प्र स न्न ह द यः सु प कं क द ली फ लं ॥ १२ ॥ श क र द्य त दु ग्धं च गो धू म स्य च वृ र्गा क म् ॥ ध त्वै क त्र स पा दं
च गृ ही त्वा गृ ह मा य यो ॥ १३ ॥ न नो व न्धु न्मा कृ य च का र वि धि ना व त म् ॥ न ह न स्य प्र सा दे न ध न प्र जा न्ति तो भ
वे न् ॥ १४ ॥ इ ह लो के सु खे भु त्वा चा ने स न्ये प्र रं य यो ॥ प न र न्य त्र व क्ष्या मि श्र ग धं मु नि स न्न मः ॥ १५ ॥ ॥

पि ठो इ पां व थो क को स पा द सहि त ग रि वो का पा रि ध र आ या ल ॥ १६ ॥ अ फ ना चं दु र्ग ला ई ज की सर्वे सा मे ल भे वि वि प्र व क
पू ना ग रि व न ग म् ॥ न स व न का प्र भा व ले ध न धान्या दि पु त्र सं पू र्ण परि पू र्ण भ यो ॥ १७ ॥ इ ह लो क मा व न सु ख भो ग ग रि प
र लो क मा सत्य लो क मा वा स ग र्ता क न ग या हे मु नि लो क कै रि अ र्को उ द्ग रा भ या को क था क र्द वु सु न ॥ १८ ॥ ॥

25

सत्यवा
८

इति श्रीमत्पद्मनाभयरायणवृत्तकथाभाषायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सुत उवाच ॥ हे मुनिसाईल सुन-उल्कामुखनामा वडा वलिया
इन्द्रियकनजिन्याका-सत्यवादिधिया-केरीकलाभन्यानिपदेवालयमार्गे दिनप्रतिबाह्यगालाई धनदानदीसंनृगगणउत्ता
तीनकीमहाराणीअत्यंत सुंदरी कमलनयनी प्रसुग्धानाउगयाकीथिइन् ॥ २ ॥ सोराजा उल्कामुखजो छन सपत्ति सहित

क

20

इति श्रीरेवारावण्डेसत्यनाभयरायणवृत्तकथायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ सुत उवाच ॥ आसीदुल्कामुखो नाम नृपतिर्व
लिनाम्बरः ॥ जिनेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति ॥ १ ॥ दिने दिने धनं दत्त्वा सद्धिजान् समुतोषयत् ॥ भार्या न
स्य प्रसुग्धा च सरोजवदना सती ॥ २ ॥ भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य वृत्तमाचरेत् ॥ एतस्मिन्नन्तरे नवसाधुरैकः समा
गतः ॥ ३ ॥ वाणिज्यार्थं वक्रधनं रत्नाद्यैः परिपूरितः नावं ह स्थाप्य नतीरे जगाम व्रतं प्रति ॥ ४ ॥ दृष्ट्वा तत्र वृत्तं सम्य
कं पृच्छ विनयाच्चितः ॥ ५ ॥

रायरा
८

भैः भद्रशीलानदिकानीरमा-सत्यनाभयरायणको वृत्तगारिष्ठ जागनी लाग्पा काधिया-त सवखनमा एकवनीया आई प्रग्या ॥ ३ ॥
वेपारगर्त निमित्त-धैरेवनमालरत्नादिगयाको नाउमालदाई ल्याया काधिया ॥ ४ ॥ ते सवनीया ले जो छ-राजाले वन
गयाको देखि नाउकिनाग-लगई-नाउवाट उत्री सोधना कनलाया हेराजन भनी-वडा भक्ति साथ विंतीगर्त लाग्पा ॥ ५ ॥

15

10

साधुसुवाच ॥ हेराजन हजरका काममालागनुभयाको छ-सो सुत्राकोइच्छा भेगो-मेरा उपर क्रीपाराव्या जावस भवी वडा वि
नयपूर्वक विंतिगयोर ॥ ६ ॥ राज आजागईत्-हेसा कुकार-मजो छ-आफना जनले सहीन भै-पुत्रादि वांछाले-अनुलने
जभयाका भगवान् दिछु कावतगर्त कनलाग्पाका छ ॥ ७ ॥ भनिआ जागयो-को विनय पूर्वक प्रणाम गरि मधुरवचन

साधुसुवाच ॥ किमिदं कुरुते राजभक्तियुक्ते वचेनमा ॥ प्रकारी कुरुत सर्वोत्तमिच्छामि सांप्रतं ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ पूज
नं क्रियते साधो विद्वोः अनुलने जसः वृत्तं च स्वजने साई पुत्राद्यावा विवाहया ॥ ७ ॥ प्रत्युवाच ततो नत्वा राजानं मधुरं व
चः ॥ साई कथय मेरा जन्तु न मेन करे म्पहम् ॥ ८ ॥ ममापि संततिर्नास्ति एतस्माद्भविता क्व वम् ॥ ततो निवृत्त्य वाणि
ज्यान्साने दोष्टहमागतः ॥ भार्यायै कथितं सर्वं वृत्तं संततिप्रदं ॥ ९ ॥ तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत् ॥ अल्पकाले गति
तस्य भार्या लीलावती सती ॥ १० ॥

5

संग विंतिगई भया-हे महाराज-यस वृत्तको विधान-क सो गर्नु पछ संपूर्णा आशा गरि वकसा मेरा पनी-संतति होन-सो वतग
नीले अवस्य संतति कन्या छन-मलाई पनि उपदे सबकसा जावस-भनी विंतीगयोर ॥ ११ ॥ राजाले संपूर्ण वृत्त काथिसे सबकसा
रवडन सुसिभै-वाणिज्यवाट फकिं घर आई सो फर्नु लीलाइ सुनाइ ॥ १२ ॥ जो न दिन-मलाई संतति होला ते सदिन वृत्तगता भनी से

कथिगना ॥ १० ॥

भीमना
५

केहिदिनविनिभयापदि. पतिव्रताधर्मसाखाकी आनन्दचित्रभयाकी साधुवनियाकी स्त्रीलीलावती गर्भवती भई जवगर्भपुर्णभया
नववक्रुतमुदसिपत्रीजन्मभई ॥११॥ साधुवनीया. वडाहर्षसाधुआफना कुलमाचली आयाभाफीक जानके मीदिगरितेस
कन्याको नाउ. कलावती भनि नाम राखी दीया. तीकन्या जो छु भुक्तपक्षका चन्दुमावछाऊँ केमे संगवढे आई ॥१२॥ रवनिया

क

गर्भपुक्ता नन्दचित्राभवद्वर्मपरायणा ॥ पूर्णगर्भेत तो या ना बालिका चानिनिर्मला ॥११॥ दिनेदिने बड्माना भुक्तप
क्षेयथावाही ॥ ततो वशिकसजायाश्च जानकमसमाचरेत् ॥१२॥ नामा कलावती चेति तन्नामकरणी कृतं ॥ ततो ली
लावति पाह स्वामिनमधुरस्वच ॥१३॥ न करोति किमर्थे च पुनर्संकल्पितं व्रतम् ॥ विवाहसमये सा साः करिष्या
मिवर्तयिष्ये ॥१४॥ इति भार्यो समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति ॥ ततश्च कलावती कन्यावदधेपितृवैशमनि ॥ १५ ॥

निजो कलावतीले आफना स्वामिवनिया संगभंडिन ॥१३॥ हे स्वामि तपाजी ले आधि. संतति भयापछियो व्रतगह
लाभनि संकल्पगर्नु भयाको हो. गरने धरका प्रसाद ले कलावती जन्मभई अवयो जो परने धरको व्रतके ले गर्वा
हो भनि सोधीर. साधुवनिया क्वा भंड भन्या. ॥१४॥ हे छिये. कलावती. यो व्रत. कलावतीको विवाह भयापछि ग
हला. भनी आफना स्त्रीलाई. भनी. नगरमा जाँ दो भयो कलावति. कन्या घरमा वरावरवढे आई ॥ १५ ॥ ॥

नारायण
५

येरुदिन. धर्मजांन्याभयाको साधुवनिया जो छ. आफनी सखी हरका संगवसि कलावतीको समर्थ देखी अवताहली
भइ विहागर्वावरव्रतभये छ भनी इष्टमित्रहरसंगसलाहगरी इतहरलाई वरखोजनु पठाया ॥१६॥ वनीयाको आमा
नुसोर. वरखोजनकने इतहरको चनहरनामानगरमा गयो ॥१७॥ तेसनगरमा विचारगर्दा वडा छेउ बुझिनाम

हस्ता कन्या ततः साधुर्नगरे सखिभिस्मह ॥ मन्त्रयित्वा व्रतन्तं प्रेषयामास धर्मवित् ॥१६॥ विवाहार्थे च कन्या
यावरं श्रेष्ठं विचारयन् ॥ तेनाज्ञप्तश्च दत्तो मोकाश्च ननगरं ययौ ॥१७॥ तस्मादेकं वशिकपुत्रं समदायगतो हि
सः ॥ हस्तात् मुन्दरं वालं वशिकपुत्रं गुणान्वितम् ॥१८॥ जानिभिर्वन्धुभिः साङ्गपरिजुष्टेन चेतसा ॥ दत्तवान्साधुरा
क्षयकन्यां तस्मै विधानतः ॥१९॥ ततो भाग्यवशात् तेन विल्लुतमुत्रमसु ॥ विवाहसमये प्यस्याजेन हृष्टो भवति
भुः ॥२०॥ ततश्च कलेन नियतो निजधर्मविशारदः ॥ वाणिज्याकाक्षया श्रीपुंजामात्रा सहितो वलिक ॥२१॥ ॥

हाजनका छोरा एक देख्यार. वन्दो वस्त्रमिलाई. संगमाली आई साधुवनीयाका अगाडि राखिदियार. साधुवनियापनी तेस
वरलाई दोखि वक्रुतखुसि भे आफना जानकगर्वा देखी विवाहगर्दिया. ॥१९॥ भाग्यवशले साधुवनियाले जो छ छोरा
को विवाहसमयमा पत्रिव्रतगर्ना कनविस्था छनर. सत्यदेव जो छ ते सवनीया माथि क्रोधभया ॥२०॥ केहिदिन पछि आ
फना धर्मचली आया कोरो जगारि मायडीत भयाका वनिया जो छ. आफना जुवाइलाईनी बेपारगर्न गयो छन ॥२१॥

वीसप
९०

समुद्रकातीरमा-रवसारनगरमापुगि श्रीमान आफना जुवाई साधली वेपारगर्ना लाग्या काथिया ॥२१॥ नारावहावसे साधु
वनियाले अधि-सत्पनारायस्वामी कावन गस्तलाभनि प्रति जाग्याको-वुननगरी प्रति जावाट भुष्टभया काफनाले जापदिदा
भया ॥२३॥ नैले वुनग हलाभनी प्रति जागरी वेपारमा आइस-भोलि देखिते उपर खडो दुःख दुःख भनी जापदिदा भया-उसे
रजसापरे रमे गत्वा सिन्धुसमीपतः वाणिज्यमकत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह ॥२२॥ एतस्मिन्नेव काले तु सत्पना
गयगात्रभुः ॥ धृष्टप्रतिजामालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान् ॥२३॥ श्वः प्रभृति कियत्कालं मरुदुःखं भविष्यति ॥
तस्मिन्नेव दिने राज्ञो धनमादाय तस्करः ॥२४॥ तेनैव वर्त्मना यातः पृष्टदेशं विलोकयन् ॥ स्वपश्चाद्वावकानृतो
नृक्षभीनेन चेतसा ॥२५॥ धनं संस्थाप्य तत्रैव दृश्यतामगमत्तव लः ॥ ततो दूतामवाताय त्रासीन्सज्जनो वारिके
दिन-राजा कादर्वारमा-चोरिगरी" धनकोपो काली भगी दुर्गदे आये पाहाले पछि पछि लगाई आये र भेटाउन लाग्यो रचो
रले-धनकोपोका-साहुको अधिवाट फाली आफु भागी गयेछर-चोर लगाई आउत्या जनहरुले-चोरता ये हिरे छभ
नी-खुसि भै पकी-साधु वनिया जु आइस्ते तला बोधी राजा का हड्डर लालगी-महा खुसि भै-विनिगर्न लाग्यो ॥ ३१ ॥ ॥

नारायण
९०

हेमलाराज हामी हलले चोरता फेला पारि सलाई ल्यायौं-अवयो चोरलाई क्या गन्यो हो-ऊकुमवक्या माफिक को सजा
गर्दा भनि विनिगयो-अवयो चोरलाई-केल खाना मालगी के दगार-भनी ऊकुमविया र हुनहरुले उवे जना लाइल
गि जेल खाना मालगी के दगदी भया ॥२६॥ सत्तजी भन्छन्-हेरिखि हो-सत्य देवकाली लाको जनी सकदछ-इउवे चोरको के
दृष्टान्त पधन नत्रवधा दूता वणि कुतौ ॥ हर्षयुक्ता धावमाना कुडुर्दपसमीपतः ॥२७॥ तस्करो दोसुमानी तो
विलोक्या जापय प्रभो ॥ तेना जप्त्त सनः वीछ दृढवधा तुता वभौ ॥२८॥ स्थापयामा सुरेवा मुकोरगारे विचारतः ॥
२९॥ सत्त उवाच ॥ मायया सत्पदेवस्य न भुतं च नोर्वचः ॥ ततस्तयोर्धनं यच्च गृहीतं च द्रुके तुना ॥३०॥ तच्छापावत
योगे हे भोय चैवाति दुःखिता ॥ चौराणप हतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनं ॥३१॥ आधिबाधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासा समाकुला ॥ अ
चविनापराभूतावधामव गृहे गृहे ॥३२॥
हिरे होरा न सुनि-वे होरा पनी तबुजि-सर्वे धनमाल खासि के दमारा विदिया-॥३०॥ चरनापनी उवे जना को चोरी लागी
धनमाल को नास भै गयो-खाघनी के टाके टिहरुले वकुने दुःख पायो ॥३१॥ आधिबाधिले पीडा भै चारमागनु पर्या भया ३२

25
20
15
10
5
0

श्रीसत्य
११

तले कलावतिकन्यापनी घर मगन्या भू एकदिने कलावती लाई भोकले साहे पीजा बोरा बासरा को घर मा केही पाउला की भन्या आ
सा ले गई घर ॥ ३३ ॥ ताहा सत्यनारायण का वन कुनला ग्या को देवी न हिवसि कथा सुनी प्रसाद सागी पेर भारवाई आफना घर
र आई र आमा ले वी गरिहे पुत्रि ॥ ३४ ॥ रानी मा कहा वसिस् ते रो मन मा क्या छ भनी हप्काई र कलावती भंदे ॥ ३५ ॥ हे नल आ

गथा कलावती कन्या वभाम प्रतिवासर ॥ एकस्मिन्दिने सारा थो शुधार्ती हि जमन्दि रम् ॥ ३६ ॥ गत्वा पश्यदु तं नवमस्य
नारायणस्य च ॥ उपविश्य कथा श्रुत्वा वारम्पार्था भिवांक्षिनम् ॥ ३७ ॥ प्रसाद भक्षणी कन्या ययोरत्रो गृह्यति ॥ ततो
लीलावतिकन्या भर्त्सया मासता भृशम् ॥ ३८ ॥ पुत्रिरात्री स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते ॥ कन्या कलावती प्राह मान
रं पतिसत्वरम् ॥ ३९ ॥ द्विजालये वृतं मानेह ह्यवांक्षितसिद्धिदम् ॥ तच्छ्रुत्वा कन्यका वाक्यं वृतं कर्तुं समुद्यता ॥ ४० ॥

ज जो छ संपूर्ण मनोरथ पूर्ण गरिदिन्या सत्यनारायण का वन गन्या को जो छ बासरा का घर मा देखा र कथा सुनि प्रसाद रवाई नारायण
आया की छ भनिकलावती ले भनी र लीलावतिले निज र सुंदी मात्र ॥ समुष्णी अहो ते सै वन गर्न कन विर्सना ले हामि हन ११
ले यो कष्ट पाया को भनि वन गर्ना को न त प भै सरजमगना कन लाग्दी भइ ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पतिव्रता धर्म मारखा की साधु वनिया कि सी लीलावती जो छ आफनी पुत्री कलावती ले सहिज वंधु वर्ग नाता गोता सवै ला
इवो लाई बडा भद्र भक्ति साथ सत्यनारायण का वन गर्दी भइ ॥ ४२ ॥ र स्तोत्रांशमा का वर मागी भन्या हे नाथ मे रापति
र जुवाई पर देस गया का कुशल साथ चां डे घर आइ पुगो स हजुर मा जो छ मे रापतिको अपराध क्षमा गर्ना को समर्थ भया को
छव भनि सुनि गरि र नै स वन गर्ना ले र सुनिले संतुष्ट भया का सत्यनारायण जो छ न सो चन्द्र केतु राजा प्रतिस्वप्नमा आजा
समुता सावणि भार्या सत्यनारायण स्य च ॥ वृतं च क्वे च वैसा धीव शुभिः स्वर्जने स्मरु ॥ ४३ ॥ भर्तृ जामात रोधि प्रमाग
क्व नां निजा मम ॥ इति दिव्यं वरं ववे सत्य देव पुनः पुनः ॥ ४४ ॥ अपराधं च भर्तुर्मजामातः क्षनुमर्हति ॥ व्रतेन त
स्मृत्यो मो सत्यनारायणः प्रभुः ॥ ४५ ॥ दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्र केतुं नृपोत्तमम् ॥ वणिजो मोचय प्रातर्वादि नो नृप
मत्तम् ॥ ४६ ॥ देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्नयानयोः ॥ नो चेत्वा त्वा रात्रि व्यामिस रात्र्यधन पुत्रकम् ॥ ४७ ॥ एवमाभाष्य
राजा नन्द्या नगम्यो भवत्यशुः ॥ तेनः प्रभात समये राजा वरजनेः सरु ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गर्दी भया ॥ ४९ ॥ हे राजन् भोलि सवेरे ति मिले चोरिका मुहा मा धुनी राखा को उवै वनिया लाइ को डिदिनु जिन को धन माल
जोलिया का छे सो दीदिनु जिदि को डो भन्या तिमा राजप धन पुत्रादि को ना सुगरि दिन्या छ भनी हप्काई सत्यनारायण अत्र
ध्यान भे गया ॥ ५० ॥ प्रातः काल भयापदि का अहुत स्वप्न भयो भनी जप्पट् सभा मागे आफना जन हन लाई अहुत दा भया ॥ ५१ ॥

बीसवा
१२

हइनही ती जेलखाना माथुना को दुवेवनीया लाई देउ भनी कुकुमभयो र हुन हलले जेलखाना मागे दुवेवनीया लाई व
धन मुक्त गरि राजा का हजूर मा ल्याई विंती गन्या हेमहराज दुवेवनीया वधन वरु जी की ल्याया भनी विंती गन्या ॥४५॥ तवरा
जाले वीण क पुत्र ह सपती आदर साथ क्या कुकुमभयो भन्या निमीरु को पूर्व काल को अभाग ले गर्दा दुख पायो आव केहि
उपविश मभामध्ये प्राहर्म विज न प्रप्ति ॥ वडो महाज नो शी छं मोचये दो वणि कुमुतो ॥४६॥ इति राजो वचः शुत्वा मोच
यित्वा महाज नो ॥ समानी यन पस्याये प्रा कु स्ते विनयान्वितः ॥४७॥ आनी तो दो वणि कुमुतो निगडव धनात् ॥
तनो महाज नो नत्वा वरु के तुं नृ पो नर्म ॥४८॥ स्मर नो पूर्व दत्तां तं नो चतु र्भय वि कलो ॥ राजो वणि कुमुतो वी क्ष्य वचः ज्ञो
वाच सा दर ॥४९॥ देवा आ प्र म हा दुःख मिदानी गालि ते भयं ॥ इत्थं मान्य वरु दा क्षु र कर्म दि का र्य त ॥५०॥ वस्त्रा
लं कार रां दत्वा परि तोष्य नृ पश्चतो ॥ पुरस्कृत्य वणि कुमुतो वच सा तो व यरु शत ॥५१॥ पुरानी तं च यद्व्यं दि गुणो
भय छे न भनि चतु के तु राजाले जो छन वरु ते कया ले पुक्त भै सन्मान साथ बोलाई हजामत गर ई वडी या २ वस्त्र आ भूषण प
हिराई संतोष गन्या वणि कुमुत लाई आ कु आग डि राखि वचन ले वरु ते संतुष्ट गर्द भया फेरि तत्का धन माल जो लिया को धियो
तेत्का दो वर फि र्ता गरि दि दा भया ॥५२॥ हे साधु वनि जा अब आनन्द साथ घर जा उ भनि वि दा दि दा भया र वनी क पुत्र ले वरु तख
सभै विंती गन्या हेमहराज हजूर का प्रसाद ले सबै पाई सत्कां भनी खुसिरा जी संग विदा भै घर निरवाना भया ॥ ॥ इति सत्य

हम हलले जेलखाना मागे
दुवेवनीया लाई देउ भनी
कुकुमभयो र हुन हलले
जेलखाना मागे दुवेवनीया
लाई वधन मुक्त गरि राजा
का हजूर मा ल्याई विंती
गन्या हेमहराज दुवेवनीया
वधन वरु जी की ल्याया
भनी विंती गन्या ॥४५॥
तवरा जाले वीण क पुत्र
ह सपती आदर साथ क्या
कुकुमभयो भन्या निमीरु
को पूर्व काल को अभाग
ले गर्दा दुख पायो आव
केहि उपविश मभामध्ये
प्राहर्म विज न प्रप्ति ॥
वडो महाज नो शी छं मोच
ये दो वणि कुमुतो ॥४६॥
इति राजो वचः शुत्वा मोच
यित्वा महाज नो ॥ समा
नी यन पस्याये प्रा कु स्ते
विनयान्वितः ॥४७॥ आनी
तो दो वणि कुमुतो निगडव
धनात् ॥ तनो महाज नो नत्वा
वरु के तुं नृ पो नर्म ॥४८॥
स्मर नो पूर्व दत्तां तं नो चतु
र्भय वि कलो ॥ राजो वणि
कुमुतो वी क्ष्य वचः ज्ञो वाच
सा दर ॥४९॥ देवा आ प्र
म हा दुःख मिदानी गालि ते
भयं ॥ इत्थं मान्य वरु दा
क्षु र कर्म दि का र्य त ॥५०॥
वस्त्रा लं कार रां दत्वा परि
तोष्य नृ पश्चतो ॥ पुरस्कृत्य
वणि कुमुतो वच सा तो व यरु
शत ॥५१॥ पुरानी तं च यद्व्यं
दि गुणो भय छे न भनि चतु के
तु राजाले जो छन वरु ते कया
ले पुक्त भै सन्मान साथ बो
लाई हजामत गर ई वडी या
२ वस्त्र आ भूषण प हिराई
संतोष गन्या वणि कुमुत लाई
आ कु आग डि राखि वचन ले
वरु ते संतुष्ट गर्द भया फेरि
तत्का धन माल जो लिया को
धियो तेत्का दो वर फि र्ता
गरि दि दा भया ॥५२॥ हे
साधु वनि जा अब आनन्द
साथ घर जा उ भनि वि दा दि
दा भया र वनी क पुत्र ले वरु
तख सभै विंती गन्या हेम
हराज हजूर का प्रसाद ले
सबै पाई सत्कां भनी खुसि
रा जी संग विदा भै घर निरवा
ना भया ॥ ॥ इति सत्य

नारायण उत कथा भावाय विंती यो ५५ पाय ॥३॥ ॥ सत उवाच ॥ ताह देखि साधु वनिया जो छ सो मंगला चार पूर्व क देवता को
पूजा गरि बाधु गालाई दक्षिणा दि दे घर ति र आउ दा भया ॥ १ ॥ तव साधु वनिया को हे वा दो ला ग्या पछि सत्य नारायण पुभु
जो छन बाधु गाला रूप भै सो धदी भया हेमहराज ने रा ना गु मा का ल्या यो भनि सो धनु भयो र ॥२॥ धन ले उन्नत भया को

सत उवाच ॥ पूजानु कृत वा साधु मंगला चार पूर्व क ॥ बाधु गो न्यो धन दत्वा तदा तु नगर ययो ॥३॥ किय दूरे गते साधो
सत्य नारायणः पुभुः जि सा सां कृत वा साधो कि म स्ति न व नो स्थितम् ॥४॥ तनो महाज नो भनो हे वा च प्र हस्य च ॥ ५ ॥
कथं दृष्ट्वा सिं भोद सिं मु जने तु कि म छ मि ॥ ६ ॥ स क्य ते के न सर्व हि कर्तुं वा त्र न सं शयः अत लं का णं यो मो वा छि ता र्थो भा वि यति

साधु वनिया ले जो छ खेल शा ५ सँग वरु ते हे ला गरि हो सि क्य भन्या भन्या हे द गि न नि मि क्य क र सो ध द छो ति मि लाई
हे वा चा हियो की क्या ममु का छ ॥७॥ हे द गि न मे रा ना उ मा क्या हो ला जना मता इत्या दि ल दाई ल्या या का छन भन्या र दे
उले पनी महाजन को नि छु र वचन मुनी का भन्या भन्या हेमहराज ने ते वचन ले जो बो ल्यो सो सत्य ले कु ना छ भनी मालि
क थो रै वा रो गे समुद्र का कि ना रा मा व स दा भया ॥८॥

श्रीमन्मः

१३

दंष्ट्रिणहवादिग सापदि महाजन्मोच्छ उरि आफतु जोगर्नुपर्या स्नान संध्यापाठपूजा जोगर्नुपर्याग रिनाउ निरहेर्नजांछ
न. नाउमा मालमन्त्रा केहि देखेन न रवडा आश्चर्य मान्यो र पक पा रि र छो ॥६॥ केरि मालमन्त्रा सवेक हा गयेछ पोनाउता
लगापना मा बदे रिंछ क्का भयो भनी मुर्छा परि भूमी मालदी बडी पनोर वनिया का जुवा नीले मन मा विचार गरि क्का भ

क

येव मुक्तागतः शी छंदं डीतस्य समीपतः ॥ किय दूत नौ गत्वा स्थितः सिन्धु समीपतः ॥५॥ गतो दण्डि निमाधु श्वरु
न नित्य कियस्तदा ॥ उन्निध स्तरणिं दृष्ट्वा विस्मयं परमं प्रपौ ॥६॥ दृष्ट्वा लतादि कंतव मूर्द्धितो न्यपत दुदी ॥ लक्ष्मं
जो वणि क पुत्रो भूरी चिन्ता परोऽभवत् ॥७॥ न दानु दुहितुः कानौ वचनं वेद मध्वीत् ॥ किमर्थं कियते शोकः शापो
दत्तश्च दण्डिना ॥८॥ शक्यते तेन सर्व हि कर्तुं चात्र न संशयः ॥ अतस्तच्छां यामो वांछिता र्थो भविष्यति ॥९॥ ॥

नारायण

१३

यो भव्या ॥९॥ हे स सुग की न विंता सा वा कुल भैरु कुं छ. यो जो छ. केही होई न अधिन पाजी ले हे ला गरि दोलन भयो र
दंडिले आपदि योगो यो ॥८॥ अवयको उ पाय केही छैन उनै संग मै विंति गर्नु पयो दंडि फुकी र ले क्का फुरे गरि मक दे
न. जो होला भनी जुवा इस सुग दंडी वस्या काठा उमा जो दो भयो ॥९॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नव साधुवनीयार जवाई दुवै जना दंडिवस्या काठा उमा पुनि राछे वाट देउवन प्राण मगरी अने गन रहसि न प्रार्थना गरि विंती गयो ॥
१०॥ हे स्वामी मैले जो अधिह जूर का अगाहि अनजान संग बोल्या को हो सो अपराध क्षमा गरि वक्ष्या जाइस अव उजीन के
रिय सेन चाहिया वचन जो छ कैसे माथि बोल्या छैन भनी अने गतर रहसि रोई विंती गरि लान जो रिख जा भैरु ॥१०॥

जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्संकाशं गतस्तदा ॥ दृष्ट्वा च दंडिनं तत्वा भक्त्या प्रोवाच सादरम् ॥१०॥ क्षमस्व चापराधं मे यदु
क्तं तव सन्निधौ ॥ एवं पुनर्पुनर्नत्वा महाशोका कुलो भवत् ॥११॥ प्रोवाच वचनं दंडी विलपंतं वि लो क्य च मा रो दी श्रु
त्वा मे वाक्यं मम पूजा वहि र्मुखः ॥१२॥ ममे क्क पा वडु बुद्धे लेखः ॥ ख मुकु र्मु दः ॥ त्वा भगवद्वा क्यं सु ति कर्तुं स
मुद्यता ॥१३॥ साधु सुवाच ॥ त्वमाया मोहिताः सर्वे ब्रह्मा शास्त्रि दिवौ कसः ॥ न जाने निगुणं रूपं न वा श्रय मि दं प्रभो ॥१४॥

मूछो हं त्वा द्धु र्थे जाने मोहि न स्तव मायया ॥

साधु वनिया ले पस्तान रह संग रोई विंति गयो को देखि भगवान् भक्त वल ल्को आसा गयो भव्या हे मुकु न रोउ मैले अधि संकल्प गयो को प्रह
गरे मे रोइ जागती सावारे वार मुख के र्था गरि स ॥१२॥ मेरा इच्छा ले हे दुई हे मैले वार वार ॥ ख पायि स भनि यस्तान रह को भ
वान दंडि को वचन सुनी साधु जो छ सुनि गर्छ ॥१३॥ साधु सुवाच ॥ हे स्वामी हजूर का माया ब्रह्मादि देव लोक सबै मोहि त छ हजूर का अ
अनुन गण रूप कन कसे ले जानि स के न ॥१४॥

श्रीमन्त्र
१४

हेनाथ मजो दुवजामुर्वदुः मेले हजूर कामहिमा जानुं मता हजूर कामाया ले मोहि वहुं मेले प्रभाश की विभवले पूजा गहला मेरा
पूजा ले प्रभाश न भया जावस ॥१५॥ मेरा धन पुत्र ले सहित मेरा हजूर का सरलामा आया को हू मेरा रभा गरि ॥ वक्त्या जाव
सभनी भक्ति पुक्त लुतिगयो को मुनि भगवान् स्वरूप दंड संतुष्ट भयार ॥१६॥ हे साधुवनिया नेरो मनोर थ पूर्य होला भनी

क

प्रसीद पूजयिष्यामि यथा विभव विस्तरे ॥१५॥ म पुत्र विन्न मुहदं वाहिमांशारणागतम् ॥ शुक्ला भक्ति पुनं वा कं पारि
तुष्टो जनाई न ॥१६॥ वरं च वांछितं दत्त्वा तवैवा नाराधीमता ततो नावं समाहृत्य दृष्ट्या विन्न प्ररितां ॥१७॥ कृपया स
त्यदेव सफलं वांछितं मम ॥ इत्युक्त्वा स्वजने साकं पूजां कृत्वा यथा विधि ॥१८॥ हर्षेण सो भवन्मूर्तः सत्यदेव
प्रसादतः ॥ नावं संमोचयत्तेन स्वदे सेगमनं कृतं ॥१९॥ ततो जामातर प्राह पश्य रत्ने पुरीमम ॥ दूतं च प्रेषया

नारायण
१५

मास निज विन्न स्वरक्षकम् ॥२०॥
वरदान दी दंडरूपी भगवान् जो हू अं वधान भया ॥ तो हा पदि साधुवनिया जो हू नाउमा हू धन ले परि पुरी भैरवा को दे
खि वहुत खुसि भै सत्यदेव का कृपा ले मेरो मनोर थ पूर्य भयो भनी आफना जन हू लाई सुनाई सत्यदेव लाई यथाशक्त
पुजा गरि आफना देस गया ॥२१॥ आफना नग को निकट मा प्रतीमा च हेतु वाई हाम्रो देस देखि यो घर मा खबर दिनि हूत पठाया

॥२०॥

उत हू जो साधुवनिया को काछर पुगी वनिया की खिलाई देखि राथ जोरी प्रणाम गरि विनिगया ॥२१॥ तपानी का खसम मु
वाई समेन धेरै धन माल ली गाउका नगीच मा अइ पुगनु भयो भनी खबर सुनाया ॥२२॥ हूत का मुख ले ये निभन्या को
सुनी साधुवनिया की खिली लवती वहुत खुसि भै सत्यदेव का पुजा गरि सकी आफना कोरी कलावतिलाई सुनाई ॥२३॥ हे

सदुतो नगरं गत्वा माधो भय्यामि लोक्य च ॥ प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा वझांजलि सदा ॥२४॥ नि कटेनगर स्येव जामा
त्रा सहितो वगि क ॥ आगतो वन्धु वर्गे श्रवित्रैश्च वहुभिर्मुनः ॥२५॥ शुक्ला दूत मुखाद्वाक्यं मरुद्वर्षवनीसनी ॥ सत्यपू
जांततः कृत्वा प्रोवाच तदनुजां प्रति ॥२६॥ वजामि शीघ्र मागच्छ साधुस दर्शनाय हि ॥ इति मातृवचः शुक्लावर्तकृत्वा
समाप्य च ॥२७॥ प्रसादं परिप्राप्य गता सापि प्रति प्रति ॥ तेन हूः सत्यदेव स्तनं तारि न रिक्षर्ग ॥२८॥ ॥

उत्रि ति प्रावा वारुति प्रो लो म्या आई पुग्या नगर को निकट मा वसी खबर पठाई दिनु भयो हेन जांडु म अहे जांडु तें वाई पूजा
सकी आउली भनी गइर ॥ कलावती जो हू आमाले भन्या का वचन सुनिमात्र आफनु पतिका दर्सन गत को हूत पतले पूजा
मात्र गरि सत्यदेव का प्रसाद ले घन गरि गइर सत्यदेव को प भै तस्को पनी कन अंतरि भा गरि दिं रा भया ॥२५॥ ॥

श्रीमन्म
१५

नवकलावतिजोह आफनापनि कोनाउधनमालमेन जलमाडुवि. पतिनदेवरावजशोकले. रोईपुष्पिमालडिबडीगरी संदि
भई. र तेसवखन मासाधुवनीयाले आफना छोरीविधवा भयाकोदेखिअ हो आश्रय पोषाभयो भनीहु लो विरह गनीलाग्या ना
उभेउ न्याहसलाईपनि आश्रय भैचिंतनागर्नलाग्या. ॥२८॥ लीलावतीपनि आफनी छोरीको अवस्थादेखि विरह देखिबडोहु

५५

संहत्यवधनेसाई जलेतत्र मम उजत ॥ ततः कलावतीकन्या नोविलोक्य निजं पतिम् ॥ २९ ॥ शोकेन महता युक्ता सदनी
चापत रुचि ॥ दृष्ट्वा तथा विधां कन्या विधवा वहु दुःखितां ॥ ३० ॥ भीतेन मनसा प्राह किमाश्चर्यमिदं महत् ॥ चिन्तया कु
लिना मेवैव भूवस्तु रिवाहकाः ॥ ३१ ॥ ततो लीलावती कन्या दृष्ट्वा तु विद्वत्पुत्रा भवत् ॥ विललासाति दुःखेन भर्तारं चेदमव
सीत् ॥ ३२ ॥ इदानीं नौकया साई कथं सो भूदलक्षितः ॥ न जाने केन देवेन हेलया वैवतकृतम् ॥ ३३ ॥ सत्यदेवस्य महा
त्पुंजानुवाकेन सकने ॥ इत्युक्त्वा विललापेन तत्रास्वजनेः सह ॥ ३४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

लो सोर सैग हुंदि भई. फेरि आफनापति साधुवनियासित भनी. ॥ ३५ ॥ हेस्वामि तत्क्षणे मा अकस्मान् नाउस्तेत का अर्थले
अलक्ष्य भैगयो. अथवा केहि देवताले. दलगरि दीपोकी. कसो भयो ॥ ३६ ॥ अथवा. सत्यदेवका महिमा पनी जानी सकनु छे
न. पूजाआजावा. मात्र कोहि वेनील पर्न गेविपरीत पर्न गया को हो. का कारणयो. आपनी आई लाग्यो भनी रोइ ॥ ३७ ॥ ॥

नारायण
१५

फेरिलीलावतीजोह आफना छोरीलाई काठमालीरुनलागी. तालपछि कलावतीकन्याले स्वामिको विरहले गरी. सह
मनगर्न कोनेयार भई. धर्मजान्या भयाका साधुवनीयाले जोह आफना छोरीको हाल देखी आफना स्त्रीको संगे येमिव
हुन विलाप गरि. मनमा कयचिन्तनागन्यो भन्या अ हो हे प्रिये. सत्यदेवको पभयो कि. सत्यदेवका चरित्रको हिजानी सकदे

नतो लीलावती कन्या कोडे कृत्वा रु रोदह ॥ ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखित ॥ ३२ ॥ गृहस्थिना दुके
तस्या नुगंतुं च मनोदधे ॥ कन्यायाश्च निन्दे दृष्ट्वा स भाव्यसृज्जनो वणिक ॥ ३३ ॥ अतिशोकेन संतप्तश्चिन्तया
मामधर्मवित् ॥ हतवा सत्यदेवेन भ्रांतो हं सत्यमायया ॥ ३४ ॥ सत्यपूजा करिष्यामि यथा विभव विजरे ॥ इ
ति सर्वात्मना हूय कथितं च मनोरथम् ॥ ३५ ॥ तत्वाच दंडवत् भूमी सत्यदेव पुनः पुनः ॥ नतस्तुष्टु सत्यदे
वो दीनानां परिपालकः ॥ ३६ ॥

न ॥ ३७ ॥ अवशोक मात्र लीवसि भयेन. संपूर्ण. सत्यदेव हो. हेस्वामि. सत्यदेव भनी वहुन नम्र भै भूमिमासिराखी
दंडवत् प्रणाम गरि. सबैलाई सुनाइ. का भयो भयो हेस्वामि. सत्यदेव मे अनाथ छु मेरो संहर्ण अपराध क्षमा गरिबसा
जावस. यथाविभव रुजूरको पूजागल्ल भनी भावित. येनि मास्वदे मा संपूर्ण प्राणीको पालनार्थ सत्यदेव संतुष्ट भै ॥ ३८ ॥

बीसव
१६

हेसाधुवनिया. तेरिहोरिले. सत्यनारायणका पूजा मावगारि प्रसादनवाई. पतीको मुखहेनीनिमित्तआआले. ॥३७॥ आफ
नुपतिलाईदेखेनरु. अब घरमें सत्यदेवका प्रसादनवाई. आवस. तबनेको पतिलाईदेखला. भन्याभक्तवत्सल सत्यदेव
कावाणि. आकासमार्गवा. सुनिर. कलावती जोह. चाडै. प्रसादेखाई. हेदा. मा. आफना पतिकनदेखदिभई. ॥३८॥

उवाचवचनंचैतत्कपयाभक्तवत्सलः ॥ न्यत्का प्रसादं ते कन्या. पतिस्तु युं समागता ॥३७॥ अतोऽहोभवत्त
स्याकन्याकायापतिर्दुर्बलम् ॥ गुरुत्वा प्रसादं च भुक्ताचायानिवेत्युनः ॥३८॥ तत्त्वभर्त्ता मुतासाधो भविष्यति न
संशया ॥ कन्याकावा दशकोर्ध्वत्वागगनमण्डलात् ॥३९॥ क्षिप्रमेव गृहं गत्वा प्रसादं च भुञ्जता ॥ तत्पश्चात्
नरागन्यददर्शं सजनम्यनिम् ॥४०॥ ततः कलावती निराजगाद पितरमुति ॥ इदानीं गृहं याहि विलंबं कुरु
येकधम् ॥४१॥

नाहापति. कलावतिकन्याले. आफना पतिकनदेखि. मनमावडा हबले. आनन्दभोगदगदयचनलेगारि. आफना
पिता साधुवनियासंगविनिगरी. हेपिता. सत्यदेवका अनुग्रहले मेरोपतीकनदेखा. अबचडै. प्रसादं भवि. ॥४१॥

नारायण
१६

र. सत्यदेवका जसादले. अपिकोजले धनधा. त्यादि प्रचले युक्त भोगया ॥८॥ इहलोकमा सुख भोग गरि परलोक
मा सत्यलोकमा वासगर्न गया. तस अर्थ जो आणिले. संपूर्णवितमा ओरुभयाको दुर्धभभयाको सत्यनारायणका
वनजोह सो जौन मनुष्यले. भक्तिअज्ञापूर्वक पवित्र भैकन योवत गली. कथा. मुन लात सुलाई सत्यनारायणका
भक्तिअज्ञाचितो भूत्वा चकार विधिना नृपः ॥ सत्यदेव प्रसादेन धनपुत्राचितो भवत् ॥९॥ इहलोके सुखं भु
क्ता पश्चात्सत्यपुरं गयो ॥ य इदं कुरुते सत्यवतं परमदुर्लभम् ॥१०॥ शृणोति च कथां पुराणं भक्तिपुक्तः स
लब्धदी ॥ धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः ॥११॥ दरिद्रो लभते विभवं द्रव्यं मुच्येत वधनात् ॥ भीतो भ
यात्स मुच्येत सत्यमेतन्न संशयः ॥१२॥ ईप्सितं च फलं भुक्ताचाने सत्यप्रव्रजेत् ॥ इति वः कथितं मित्राः स
त्यनारायणवतम् ॥१३॥

सादले. धनधान्यादिकले पूर्ण होला ॥१०॥ दरिद्रियोवत गया धन होला. वंधनमाप्याकाले ग्यावंधनवा. मुक्त हो
ला. भयागुरिले गया. भयदेखि मुक्त होला. योवचनजोह सत्य हो. यस्माके हि संदेह छैन. ॥११॥ फिरकलाभन्या आ
फना मनले चितायाको फल को भोग गरि. अंतकालमा सत्यलोकमा वास पाई. साजो हो. सोतिमिह कन वतायाको छु
भनि. सुन जी जोहन् सोनकादि प्रती आग्यागदीभया ॥१२॥

20

15

10

5

श्रीसत्य
१५

हे मुनिलोक हो अस्को कृपाले संपूर्ण मनुष्याहस्तुः खदेखि सकु कुंछ विशेषले नाकलिकालमाता सत्य देवकापू
जाजोछ वडा फलदायक छ ॥१३॥ इपर मेधालाई केहिकालमा सत्य मेधार भंछन् केहिकालमा सत्य नारायण
भंछन् केले सत्य देव भंछन् सवै उने छन् ॥१४॥ विष्णु सनातन जोछन् कलियुगमा अनेग रूप धारण ग
यच्छत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ विशेषतः कलियुगे सत्य पूजा फलप्रदा ॥१३॥ केचित्काले वदि
ष्यति सत्यमीश ते मेवाहि ॥ सत्य नारायण केचित्सत्य देव न तथापरे ॥१४॥ नाना रूप धरो भूत्वा सर्वे धामीप
सितप्रदः ॥ भविष्यति कलौ विष्णु सत्यरूपी सनातनः ॥१५॥ य इदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसतमाः ॥
तस्य नश्यन्ति पापानि सत्य देव सादतः ॥१६॥ भइति श्री स्कंद पुराणे रेवत्योऽध्यायः सत्य नारायण व्रत कथायां
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

कु

नारायण
१६

रि सवैलाई मनोवांछित फलदित्याहुन् ॥ १५ ॥ हे मुनि श्रेष्ठ हो जो न प्राणि नित्य यस्को पाठ गर्ता अथवा सु
नला तस्कन सत्य देवका प्रसादले गरि संपूर्ण पाप जोछ सो सवै नष्ट भै जाछ भनी सूत जी जोछ सौनकादि मुनि
हर्षप्रति आशा गर्दा भया ॥१६॥ भइति श्री सत्य नारायण व्रत कथा वार्तिक भाषानंद कुमारी मिश्र कृत पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

४२/१२

0 cmts.

5

10

15

20

25

30